१.१.७ आधुनिक ज्ञान प्रणाली के साथ संस्कृत ज्ञान परम्परा का समायोजन करते हुए सरल मानक संस्कृत के माध्यम से पाठ्य / संदर्भग्रन्थ के साथ विकसित एवं पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों का विवरण।

विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रमों में शास्त्रीय ज्ञान के पारम्परिक प्रविधियों के साथ साथ आधुनिक ज्ञान प्रणाली एवं आधुनिक विषयों का सुन्दर समायोजन किया गया है । विश्वविद्यालय **B.Lib, B.Voc, M.Voc, B.ed** जैसे समसामयिक कार्यक्रम, ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड, आंतरिक सज्जा, पत्रकारिता विषयक प्रमाणपत्रीय,संगीतादि डिप्लोमा के पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। आधुनिकतम प्रणली का विनियोग करते हुए विश्वविद्यालय के ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केंद्र द्वारा सरल मानक संस्कृत शिक्षण, कर्मकांड, वास्तु, ज्योतिष, योग, दर्शन और वेदांत आदि दस विषयों में त्रैमासिक, षाण्मासिक और वार्षिक पाठ्यक्रम स्वीकृत किए गए हैं। ऑनलाईन ३० कार्यक्रमों में सरल मानक संस्कृत के माध्यम से समाज के सभी वर्गों से ८०० से अधिक अध्येता लाभान्वित हैं। आधुनिक अध्ययन सामग्री का समावेश करते हुए हिंदू अध्ययन, एम.ए. योग पाठ्यक्रम भी नवीनतया प्रारंभ किए गए हैं।

शास्त्री व आचार्य के कार्यक्रमों में कवर्गीय मुख्य विषय संस्कृत माध्यम में ही पढ़ाया जाता है तथा आधुनिक पाठ्यक्रमों में भी एक पत्र संस्कृत का अनिवार्यतया समाविष्ट है । वेद-वेदांग,दशर्न,साहित्य,उपषिद् एवं नीतिग्रन्थों के पारम्परिक अध्ययन एवं आधुनिक विषयों के समायोजन पूर्वक प्रत्येक सत्रार्द्ध में आठ पत्र होते हैं वैकल्पिक और अतिरिक्त विषयों के लिए एक पत्र निर्धारित है। राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति, भूगोल , हिंदीभाषा, नेपालीभाषा, पालि , प्राकृत, प्राचीन भारतीय राजनीति , विज्ञान, (रसायन विज्ञान। जीव विज्ञान, भौतिकी विज्ञान) तुलनात्मकदर्शन , समाजशास्त्र, भाषाविज्ञान, गृहविज्ञान , इतिहास, पुराण, कन्नड़ भाषा आदि समसामयिक विषयों एवं भारतीय भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में समाहित है । भाषाओं में अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रेंच, चीनी और तिब्बती भाषाओं में विकल्प उपलब्ध हैं। प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए कुल १०० अंक निर्धारित हैं जिसमें २५ अंकों का आंतरिक मूल्यांकन और ७५ अंकों की वार्षिक परीक्षा होती है, उत्तीर्ण होने के लिए कुल ३६ अंक आवश्यक हैं। शास्त्रीय विषय के साथ साथ आधुनिक वैकल्पिक विषय में उत्तीर्णता अनिवार्य है । सम्प्रति संगणक एवं आंग्ल विषय को भी शिक्षानीति के अनुरूप पाठ्यक्रम में सत्र २०२१-२२ से अनिवार्यतया सम्मिलित किया गया है ।

- सरल मानक संस्कृत ज्ञान के लिए प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम और सेतु पाठ्यक्रम प्रचलित हैं।

- भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक प्रणाली के साथ समायोजन करने के लिए विश्वविद्यालय में यंत्रालय, वेधशाला, गृह विज्ञान प्रयोगशाला, यज्ञ शाला, पुरातत्व संग्रहालय, औषधि उद्यान, ध्वनिसंग्रहण कक्ष और एक नाट्यशाला है।
- परिसर में छात्रों के विकास के लिए पाण्डुलिपि सम्पादन कार्यशाला , संस्कृत सूक्तियों के मुद्रण और प्रकाशन है। सायं प्रातः परिसर में ध्वनि यंत्रों के साथ संस्कृत के श्लोक सस्वर ध्वनियंत्र के माध्यम से गुंजायित किए जाते हैं।
- विश्वविद्यालय सरल मानक संस्कृत से संबंधित कार्यक्रम संचालित करता है। इन सभी कार्यक्रमों की उपयोगिता धर्मग्रन्थ-पाठ के शिक्षण में दृष्टिगोचर होती है। उदाहरण के लिए, वाक् सभा, शास्त्रार्थ सभा, वाग्वर्धिनी सभा, एकल भाषण, श्लोकान्त्याक्षरी, सूत्रान्त्याक्षरी, समस्या समाधान आदि कार्यक्रम सरल मानक संस्कृत भाषा के माध्यम से संचालित किये जाते हैं।
- विद्यार्थियों के लिए निरन्तर संस्कृत संभाषण शिविर, भाषण सभा, शास्त्रार्थ सभा एवं विभिन्न स्तर की प्रतियोगिताएँ समायोजित की जाती हैं ।
- विश्वविद्यालय ने पारम्परिक विषयों में शास्त्री तथा आचार्य के विविध पाठ्यक्रमों में निर्धारित एवं सन्दर्भित ग्रंथों का प्रकाशन सरल मानक संस्कृत के अनुसार निर्धारित किया है। इस क्रम में सिद्धांत तत्त्वविवेक, श्रीकृष्णस्तव, व्याकरणदर्शनप्रतिमा, सामान्यनिरुक्तिसौगन्ध्य, वास्तुसारसंग्रह, बृहत् संहिता, अर्वाचीन ज्योतिर्विज्ञान, काशीखण्ड, अष्टाध्यायी मन्थन सरलत्रिकोणमिति, रसमंजरी लघुपाराशरी, सूर्यसिद्धांत, कामन्दकीय नीतिसार, कौटिलीय अर्थशास्त्र, संग्रहशिरोमणि, सूर्यग्रहण, सामान्यनिरुक्तिविवेचना, न्यायमंजरी,वैयाकरणभूषसार,पिंगलछन्दसूत्रम्, लोकमाता गंगा,अन्नप्राशन संस्कार, कर्णवेधसंस्कार, सर्वानन्दकरण, सिद्धान्तचिन्तामणि, शब्दविमर्श, कालसिद्धान्तदर्शिनी, ईश्वरवाद आदि सरल मानक संस्कृत के अनुरूप विश्वविद्यालय के द्वारा प्रकाशित हैं।

- संस्कृत सम्वर्द्धन प्रतिष्ठान के साथ एक सामंजस्य ज्ञापन (MOU) स्थापित करने के बाद सरल मानक संस्कृत हेतु प्रबोधन प्रकल्प एवं विश्वविद्यालय द्वारा पाण्डुलिपियों के संरक्षण संवर्द्धन तथा उनके प्रकाशन की दिशा में संस्था अग्रसर है । शास्त्री स्तर में विश्वविद्यालय के संस्कृत पाठ्यक्रम संगणकीय विषय भी समाहित जैसे यांत्रिकी के दृष्टिकोण से व्याकरण पाठ्यक्रम में पाणिनि सूत्रो का भाषा विज्ञान की दृष्टि से कम्प्यूटेशनल अनुप्रयोग को निर्धारित करता है। ज्योतिष पाठ्यक्रम में शास्त्री स्तर पर और आचार्य स्तर पर लीलावती, बीजगणित, लघुरिक्थ से संबंधित विषय कंप्यूटर विज्ञान पर आधारित हैं। खगोल विज्ञान में उपकरणों के निर्माण की प्रक्रिया में उसी कंप्यूटर पद्धति का उपयोग किया जाता है। शब्दकोशों और निरुक्तों के माध्यम से संस्कृत को आधुनिक भाषाविज्ञान और कंप्यूटर के साथ प्रयोगात्मक रूप से कैसे एकीकृत किया जाए, यह भी पाठ्यक्रम का आवश्यक विषय है। वहां सरल मानक संस्कृत के द्वारा जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न परियोजनाएं चलायी गयी हैं।

- शास्त्रप्रौढ़ि - इस प्रकल्प के अन्तर्गत शास्त्र संबंधी विषयों का ऑनलाइन अध्यापन निशुल्क करवाया जाता है। इस में अन्तर्गत ज्योतिष, व्याकरण, न्याय, वेद, वेदांत और पालि का अध्यापन कराया जाता है ।
- श्रुतिनिस्स्वन -इस प्रकल्प में में, छात्रों को वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके मौखिक निर्देश दिए जाते हैं।
- कौशल पाठ्यक्रम - विश्वविद्यालय दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र के द्वारा ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड, आंतरिक सज्जा विषयक ,सर्टिफिकेट डिप्लोमा, स्नातक पाठ्यक्रम (B.VOC) और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (M.VOC) के नाम से सरल मानक संस्कृत पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
- ऑनलाइन पाठ्यक्रम- विश्वविद्यालय के ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केंद्र के द्वारा १० विषयों में सरल मानक संस्कृत शिक्षण, कर्मकांड, वास्तु, ज्योतिष, योग, दर्शन और वेदांत आदि दस विषयों में त्रैमासिक, षाणमासिक और वार्षिक पाठ्यक्रम स्वीकृत किए गय हैं। यहाँ ३० कार्यक्रम सरल मानक संस्कृत के माध्यम से प्रचलित हैं। जिससे ८०० छात्र लाभान्वित हुए हैं।
- ऑनलाइन बौद्ध दर्शन पाठ्यांश- यह परियोजना बौद्ध दर्शन और पालि के शास्त्रीय विषयों का सरल अवबोधन कराती है। ऑनलाइन में सौ से अधिक पाठ्यांश इसके उपलब्ध हैं।

  इस प्रकार पाठ्यचर्या बोध को विकसित करने के उद्देश्य से विविध प्रकल्प अनुष्ठित किए गए हैं । समस्त पाठ्यक्रम विवरण एवं प्रकाशित ग्रन्थों की प्रकाशन सूची निदर्शिका के रूप में विश्वविद्यालय के आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इस प्रकार विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में आधुनिक ज्ञान प्रणाली के साथ संस्कृत ज्ञान परंपरा का एकीकरण है।

1.1.7 Q1M

आधुनिकज्ञानप्रणाल्या सह संस्कृतज्ञानपरम्परायाः समायोजनं दधानाः सरलमानकसंस्कृतेन पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थसहिताः विकासिताः पाठिताश्च पाठ्यक्रमाः।

वर्तमानयुगे छात्राणामाजीविकाकौशलाभिवृद्धये भारतीयज्ञानपरम्परायाः संरक्षणाय सम्पोषणाय च विविधान् प्रकल्पान् विश्वविद्यालयः समायोजयति। संस्कृतज्ञानप्रणाल्या सहविश्वविद्यालये B.Lib, M.Libपाठ्यक्रमः पत्रकारितापाठ्यक्रमः संगीतादीनां डिप्लोमा आधुनिकभाषानां पाठ्यक्रमाश्च निर्धारिताः सन्ति । सर्वेषुपाठ्यक्रमेषु आधुनिकज्ञानप्रणालीनां आधुनिकविषयानां च निवेशः वर्तते तत्र च खवर्गे आधुनिकविषयेषु ग्रहणं वर्तते। । खवर्गे च इमे विषयाः निर्धारिताः सन्ति। १. राजशास्त्रम्, २. अर्थशास्त्रम्, ३. इतिहासः, ४. प्राचीन-भारतीयेतिहासः संस्कृतिश्च, ५. भूगोलः,६. हिन्दीभाषा,७. नेपालीभाषा, ८. पालिः, ९. प्राकृतम् १०. प्राचीनभारतीयराजनीतिः११. विज्ञानम्,(रसायनविज्ञानम्, जीवविज्ञानम्,भौतिकविज्ञानम्,) १२. तुलनात्मकदर्शनम् १३. समाजशास्त्रम्,१४. भाषाविज्ञानम्, १५. गृहविज्ञानम्

१६. इतिहासपुराणम्, १७. कन्नड़भाषा। विविधानां भाषाणामापि विकल्पः छात्रेभ्यो दत्तः वर्तते। तत्र भाषासु अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रेञ्च, चीनी, तिब्बती-भाषायां च पाठ्यक्रमाः वर्तते।

- ➢ सरलमानकसंस्कृतज्ञानाय प्रमाणपत्रीयपाठ्यक्रमः सेतुपाठ्यक्रमश्च प्रचलितो विद्यते ।
- ➢ आधुनिकप्रणाल्या सह भारतीयज्ञानपरम्पराया समायोजनं कर्तुम् विश्वविद्यालये यन्त्रालयः, वेधशाला, गृहविज्ञानप्रयोगशाला, यज्ञशाला, पुरातत्वसंग्रहालय, भैषाज्योद्यानम्, ध्वनिमुद्रणालयः, नाट्यशाला च विद्यते।
- ➢ छात्राणां विकासाय पाण्डुलिपिसम्पादनकार्यशाला, परिसरे सूक्तीनां संस्कृतांशनां मुद्रणं प्रकाशनं च विद्यते ध्वनिवाद्ययन्त्रेण प्रातःकाले सायंकाले च संस्कृतश्लोकानां परिसरे गुंजायनं क्रियते।
- ➢ विश्वविद्यालये सरलमानकसंस्कृतसम्बद्धाः कार्यक्रमाः क्रियन्ते। तेषां सर्वेषां कार्यक्रमाणां उपयोगित्वं शास्त्रपठनपाठने दरीदृश्यन्ते। यथा वाक्सभा, शास्त्रार्थसभा, वाग्वर्द्धिनीसभाएकलभाषणम्, श्लोकान्त्याक्षरीसूत्रान्त्याक्षरीसमस्यापूर्तिप्रभृतयः कार्यक्रमाः सरलमानकसंस्कृतेन आयोज्यन्ते।
- ➢ यथासमयं संस्कृतसंभाषणशिविराणि वाग्वद्धिनीसभाः शास्त्रार्थसभाः विविधस्तरीयप्रतियोगिताश्च छात्राणांकृते समायोज्यन्ते।
- ➢ विश्वविद्यालयद्वारा सरलसंस्कृतमानकेन पाठ्यक्रमे निर्धारितानां ग्रन्थानां प्रकाशनं विहितम्। अस्मिन् क्रमे सिद्धान्ततत्त्वविवेकः, श्रीकृष्णस्तवः, व्याकरणदर्शनप्रतिमा, सामान्यनिरूक्तिसौगन्ध्यम्, वास्तुसारसंग्रहः, बृहत्संहिता, अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम्, सरलत्रिकोणमितिः, लघुपाराशरी, सूर्यसिद्धान्तः, कामन्दकीयनीतिसारः, कौटिलीयार्थशास्त्रम्,संग्रहशिरोमणिः , सूर्यग्रहणम् ,सामान्यनिरूक्तिविवेचना, रसमंजरीप्रभृतयः ग्रन्थाः सरलमानकसंस्कृतेन विश्वविद्यालयद्वारा प्रकाशिताः ।

- विश्वविद्यालयद्वारा संस्कृतसम्वर्धनप्रतिष्ठानेन साकंMOUसंस्थाप्य ततःप्रकाशितानि शिक्षानीत्यनुसारं अनिवार्यतया संगणकस्य निवेशः पाठ्यक्रमे विद्यते । शास्त्रिस्तरे विश्वविद्यालयस्य संस्कृतपाठ्यक्रमे संगणकीयाः विषयाः सन्ति, यथा व्याकरणपाठ्यक्रमे पाणिनीयसूत्राणां भाषाविज्ञानदृष्ट्या संगणकीयमनुप्रयोगः निर्धारितो विद्यते । ज्योतिषपाठ्यक्रमे शास्त्रिस्तरे आचार्यस्तरे च लीलावतीबीजगणितलघुरिक्थसम्बन्धिविषयाः संगणकीयविज्ञानाश्रिता एव । ज्योतिषे यन्त्रनिमार्णप्रक्रियायामपि संगणकीया विधिरेव प्रयुज्यते । कोश-निरूक्तादिमाध्यमेन आधुनिकभाषाविज्ञानेन संगणकेन च संस्कृतभाषायाः कथं प्रायोगिकदृष्टया समन्वयः भवेदित्यपि पाठ्यचर्यायाः अनिवार्यविषयाः सन्ति।तत्र **सरलमानकसंस्कृतेन** प्रबोधनायविविधाःप्रकल्पाःसमनुष्ठितास्सन्ति

➢ शास्त्रपौढ़िः -अस्मिन् प्रकल्पे सरलमानकमाध्यमेन अन्तर्जालद्वारा शास्त्रीयविषयाः पाठ्यन्ते। तत्र ज्योतिष-व्याकरण-न्याय-वेद-वेदान्त-पालिप्रभृतयः विषयाः प्रमुखाः।

➢ श्रुतिनिस्स्वनः अस्मिन् प्रकल्पे वैदिकमन्त्राणाम् उच्चारणपूर्वकं स्वरनिर्देशनं छात्रेभ्यो विधीयते। अन्तर्जालप्रकल्पे वेदेषु विशेषतः सामवेदस्य मन्त्राणाा। आरोहावरोहक्रमेण उच्चारणविधेः पाठः संकल्पितो

विद्यते। तत्रपाठद्वयं प्रसिद्धं वर्तते- प्रकृतिपाठः विकृतिपाठश्च। यद्यपिमन्त्रोच्चारणविधेः पाठनपाठनं प्रत्यक्षविधिना भवति स्म किन्तु प्रथमबारं विश्वविद्यालयोऽयमन्तर्जालमाध्येन सामवेदविषये पाठनमकरोत् । तत्रसंहितापाठे अष्टविकृतिपाठानां अन्तर्जालमाध्यमेन उच्चारणे अवरोहरोहक्रमं पृथक्कृत्वा सुस्पष्टरूपेण वेदपारायणमभवत् ।

- वेदविज्ञानव्याख्यानमाला -अस्मिन् प्रकल्पे वेदविज्ञानयोः समन्वयपूर्वकं विश्वस्तरीयविदुषां व्याख्यानानि सरलमानकमाध्यमेन संकलितानि विद्यन्ते। तत्र ५० व्याख्यानानि अन्तर्जाले उपलब्धनि सन्ति।
- विद्वद्वैभवपरम्परा -अत्र दृश्यश्रव्यमाध्यमेन अन्तर्जालद्वारा विश्वविद्यालयस्य आचार्यपरम्परायाः चित्रांकनं विधीयते।
- काव्यकल्लोलिनी -अस्मिन् अन्तर्जालीये प्रकल्पे छात्राणां सरलमानकमाध्यमेन काव्यकौशलविकासाय अभ्यासः विधीयते। अस्यापि ३० चक्राणि प्रपूरितानि सन्ति ।
- भारतीयज्ञानवैभवसमुल्लासः -अस्मिन् प्रकल्पे भारतीयज्ञानपराम्परायाः समन्वयपूर्वकं विश्वस्तरीयविदुषां सरलमानकमाध्यमेन व्याख्यानानि संकलितानि विद्यन्ते। तत्र ३५ व्याख्यानानि अन्तर्जाले संकलितानि सन्ति।
- कौशलपाठ्यक्रमाः-विश्वविद्यालये दीनदयालउपाध्यायकौशलकेन्द्रपक्षतः ज्योतिषवास्तुकर्मकाण्ड-आन्तरिकसज्जा विषयकाः प्रमाणपत्रीय-डिप्लोमा स्नातकपाठ्यक्रमाः (B.VOC) स्नातकोत्तरपाठ्यक्रमाश्च (M .VOC) नाम्ना पाठ्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते। तत्रापि सरलमानकसंस्कृतेन अध्ययनाध्यापनक्रमः विधीयते। तत्र च समाजस्य सामान्यजनाः लाभान्विताःभवन्ति।
- भारतीयज्ञानपरम्पराव्याख्यानमाला-अस्मिन् प्रकल्पे भारतीयज्ञानपरम्पराकेन्द्रपक्षतः विशिष्टानां विदुषां भारतीयकलाशिल्पस्थापत्यसम्बद्धानि विशिष्टानि व्याख्यानानि अन्तर्जालमाध्यमेन भवन्ति । तत्र च १५ व्याख्यानानि जातानि सन्ति ।
- ऑनलाइनपाठ्यक्रमाः-विश्वविद्यालयद्वारा दशसु विषयेषु ऑनलाइनसंस्कृतप्रशिक्षणकेन्द्रद्वारा त्रैमासिकाः, षाण्मासिकाः वार्षिकाश्च पाठ्यक्रमाः यथा सरलमानसंस्कृतशिक्षणम्, कर्मकाण्डः, वास्तु, ज्योतिषम्, योगः, दर्शनम्, वेदान्तप्रभृतयः दशविषयाः स्वीकृताः सन्ति यत्र ३० कार्यक्रमाः सरलमानकसंस्कृतेन प्रचलिताः वर्तन्ते येन ६०० छात्राः लाभन्विताः सन्ति ।
- ऑनलाइन बौद्धदर्शन पाठ्यांश-अस्मिन् प्रकल्पे बौद्धदर्शनस्य पालिविषयस्य च शास्त्रीयविषयाणां सरलतयाप्रबोधनं क्रियते। तत्र शताधिकाः पाठ्यंशाः अन्तर्जाले समुपलब्धाः सन्ति।

- अन्तर्जालमाध्यमेनसर्वत्र संस्कृतसर्वेषांमुखसंस्कृतम्, ग्रामे-2 नागरे-2, संस्कृतवाणीप्रसरेदितिधिया संस्कृतस्य भाषाशिक्षणप्रकल्पः विश्वविद्यालयीयाध्यापकैः सञ्चालितः। प्रकल्पेऽस्मिन् भाषासंभाषणभ्यासः प्रमुखः आसीत्गौणतयाव्याकरणादिनियमानांसंयोजनापिअध्यापकैरकारि।

- **ज्ञानचर्चा**सामूहिकअन्तर्जालप्रकाल्पद्वारा शास्त्रेषु विद्यमानानां प्राचीनज्ञानवैभवानां आधुनिकज्ञानद्वाराप्रसारणं विहितम्। यथा-भगवद्गीतायाः दार्शनिकीदृष्टिः नवधाभक्तिविमर्शः श्रीमद्भगवतपरिचर्चा, रामचरिताश्रितोद्बोधनप्रभृतयः प्रकल्पाः अनुष्ठिताः।
- ऑनलाइन बौद्धदर्शनपाठ्यांशः-अस्मिन् प्रकल्पे बौद्धदर्शनस्य पालिविषयस्य च शास्त्रीयविषयाणां सरलतयाप्रबोधनं क्रियते। तत्र शताधिकाः पाठ्यंशाः अन्तर्जाले समुपलब्धाः सन्ति।

एतेषां सर्वेषां पाठ्यक्रमाणां प्रश्नपत्राणि च संस्कृतभाषायामेव निर्मीयन्ते।। इत्थं विश्वविद्यालयेआधुनिकज्ञानप्रणाल्या सह संस्कृतज्ञानपरम्परायाः समायोजनं विद्यते। अन्तर्विषयकावबोधनवर्द्धनाय च एम.ए.हिन्दू स्टडीज, एम.ए. योगशास्त्रम् पुस्तकालयविज्ञानम् शिक्षाशास्त्रिप्रभृतयः पाठ्यक्रमाः अभिनिविष्टाः। सरलमानकसंस्कृतसम्बद्धानि पुस्तकानि भाषाशिक्षणे प्रयुज्यन्ते। इत्थं विश्वविद्यालयस्य सर्वेपि शैक्षणिकप्रकल्पाः संस्कृतमाध्यमेन भवन्ति।